SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जनजातीय समाज और स्वास्थ्य समस्याएँ

रीता यादव, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शासकीय दाऊ कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
रीता यादव, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
शासकीय दाऊ कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 22/06/2021
Plagiarism : 00% on 15/06/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

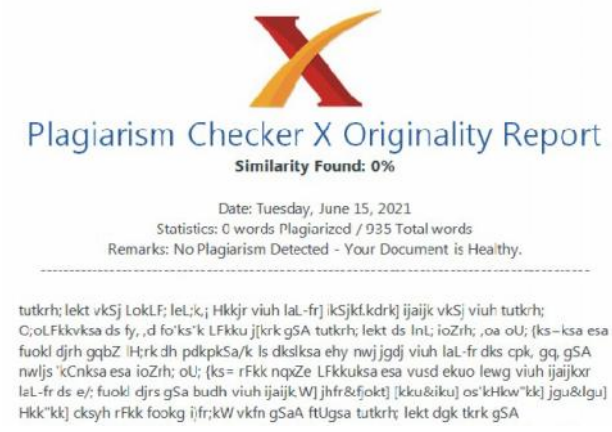

Date: Tuesday, June 15, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 935 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

---

tutkrh; lekt vkSj LokLF; leL;k,¡ Hkkjr viuh laL-fr] ikSjkf.kdrk] ijaijk vkSj viuh tutkrh; O;oLFkkvksa ds fy, ,d fo'ks"k LFkku j[krk gSA tutkrh; lekt ds lnL; ioZrh; ,oa oU; {ks=ksa esa fuokl djrh gqbZ lH;rk dh pdkpkSa/k ls dkslksa ehy nwj jgdj viuh laL-fr dks cpk, gq, gSA nwljs 'kCnksa esa ioZrh; oU; {ks= rFkk nqxZe LFkkuksa esa vusd ekuo lewg viuh ijaijkxr laL-fr ds e/; fuokl djrs gSa budh viuh ijaijk,W] jhfr&fjokt] [kku&iku] os'kHkw"kk] jgu&lgu] Hkk"kk] cksyh rFkk fookg i)fr;kW vkfn gSaA ftUgsa tutkrh; lekt dgk tkrk gSA

शोध सार

भारत अपनी संस्कृति, पौराणिकता, परंपरा और अपनी जनजातीय व्यवस्थाओं के लिए एक विशेष स्थान रखता है। जनजातीय समाज के सदस्य पर्वतीय एवं वन्य क्षेत्रों में निवास करती हुई सभ्यता की चकाचौंध से कोसों मील दूर रहकर अपनी संस्कृति को बचाए हुए है। दूसरे शब्दों में पर्वतीय वन्य क्षेत्र तथा दुर्गम स्थानों में अनेक मानव समूह अपनी परंपरागत संस्कृति के मध्य निवास करते हैं इनकी अपनी परंपराएँ, रीति–रिवाज, खान–पान, वेशभूषा, रहन–सहन, भाषा, बोली तथा विवाह पद्धतियाँ आदि हैं, जिन्हें जनजातीय समाज कहा जाता है। मानवशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों एवं नेतृत्वशास्त्रियों ने इन्हें अलग–अलग नाम से संबोधित किया है जैसे श्री एल्विन एवं हट्टन ने 'आदिमजातियाँ, श्री सरवेन्स ने 'पर्वतीय जातियाँ', श्री टेलेन्ट्स सेल्जनिक तथा मार्टिन ने इन्हें 'सर्वजीववादी' कहा है, श्री रिसले, सोबर्ट, लेके ग्रिगसन, टेलेट्स, मार्टिन, सेल्जविक तथा ए. बी. थक्कर ने इन्हें 'आदिवासी' नाम से संबोधित किया है। श्री वेन्स ने इन्हें 'वन्यजाति', प्रोफेसर जी. एस. धुर्ये ने इन्हें 'कथित आदिवासी' अथवा पिछड़े हुए हिंदू कहकर संबोधित किया है तथा इनके लिए 'अनुसूचित जनजाति' नाम प्रस्तावित किया था। भारतीय संविधान के द्वारा डॉक्टर धुर्ये के प्रस्तावित नाम को स्वीकार किया गया है, अर्थात् संवैधानिक रूप से इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' कहा गया है।

मुख्य शब्द

जनजातीय, स्वास्थ्य समस्याएँ, अंधविश्वास, अशिक्षा, निर्धनता.

वास्तव में जनजातियाँ ऐसे मानव समूह है जो सभ्य समाज से दूर रहते हुए आदिम–जीवन गुजार रहे हैं तथा जो प्रत्येक रूप से सभ्य समाज से पिछड़े हुए हैं।

इनकी अपनी कुछ समस्याएँ परंपरागत स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो सभ्य समाज के संपर्क में आने के फलस्वरूप उत्पन्न हो गई है। जनजाति वह सामाजिक समूह है जो दुर्गम स्थानों में रहते हुए सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षों में समानता प्रदर्शित करते हुए परंपरागत संस्कृति के अनुसार जीवन यापन करता है।

जनजाति समूह जंगलों, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों व बीहड़ों में हजारों सालों से निवास करता आ रहा है। यह एक निर्धन एवं कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि भारतीय संविधान के द्वारा इन्हें विशेष रूप से संरक्षण प्रदान किया गया है जो समस्याएँ ग्रामों में रहने वाले ग्रामीणों की होती है, वही समस्याएँ जनजातियों की है। प्रोफेसर धुर्ये का कथन हैः ''जनजातियों की भी वही समस्याएँ हैं, जिससे ग्रामीण भारत जूझ रहा है।'' जनजातियों की कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो परंपरागत रूप से इनके साथ जुड़ी आ रही है। कुछ बाह्य कारणों से उत्पन्न समस्याएँ है तो कुछ आंतरिक कारणों से उत्पन्न समस्याएँ है।

आर्थिक पिछड़ेपन एवं असुरक्षित आजीविका के साधनों के कारण जनजातियों को विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जनजातीय क्षेत्रों में मलेरिया, क्षय रोग, पीलिया, हैजा तथा अतिसार जैसी बीमारियाँ व्याप्त रहती हैं। लौह तत्व की कमी, रक्ताल्पता, उच्च शिशु मृत्यु दर एवं जीवन प्रत्याशा का निम्न स्तर, कुपोषण आदि प्रमुख स्वास्थ्यगत समस्याएँ हैं। स्वास्थ्य जीवन सर्वश्रेष्ठ एवं बहुमूल्य निधि हैं। स्वस्थ्य व्यक्ति ही अपने, अपने परिवार समाज, तथा राष्ट्र की बहुमुखी प्रगति में अहम भूमिका निभा सकता है। कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, जबकि अस्वस्थ व्यक्ति अपने आप पर, परिवार, समाज एवं राष्ट्र पर बोझ बन जाते हैं। जनजातियों में फैली अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास, आर्थिक विषमता, धार्मिक विश्वास, भाग्यवादिता, प्रचलित एवं परंपरागत मान्यताएँ, निर्धनता तथा पोषण आहार के ज्ञान का अभाव आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कारण माने जा सकते हैं जिनके संयुक्त प्रभाव के परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती है। गंभीर बीमारियों में भी लोग तंत्र–मंत्र एवं झाड़–फूँक पर विश्वास करते हैं। जनजातीय क्षेत्रों में एक ओर तो पर्याप्त चिकित्सालयों का अभाव है और जिन क्षेत्रों में चिकित्सालय की व्यवस्था है वहाँ चिकित्सक एवं पर्याप्त सुविधाओं का अभाव रहता है। जब जनजातीय परिवार के सदस्य गंभीर बीमारियों की गिरफ्त में आने के उपरांत स्वास्थ्य सेवा केंद्र में पहुंचते हैं तो महँगी–महँगी, दवाइयां, चिकित्सालय में कार्यरत कर्मचारियों के व्यवहार, मेडिकल ज्ञान की अज्ञानता, ईलाज में लापरवाही एवं लेटलतीफी आदि के कारण झाड़–फूँक, पूजा–पाठ, जड़ी बूटियां तथा जादू टोना आदि के द्वारा ही बीमारी को ठीक करना उचित समझते हैं। सबसे महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि संतुलित एवं पौष्टिक आहार तथा विटामिन युक्त भोजन के अभाव के कारण जनजातीय सदस्यों का स्वास्थ्य कमजोर होता जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप इनकी कार्यकुशलता एवं क्षमता प्रभावित हो रही है। आवास, स्वच्छ जल की व्यवस्था के कारण यह नदी, खेत, कुँए तथा तुर्री आदि का पानी पेयजल के रूप में उपयोग करते हैं। निर्धनता के कारण संतुलित आहार का अभाव है, बीमारी की चपेट में आने पर जनजातीय समाज के लोग और रोग उत्पन्न होने वाले प्रमुख कारक देवी–देवता का प्रकोप मानते हैं। इनके स्वास्थ्य संबंधी विश्वास आज भी अंधविश्वासों एवं धर्म से नियंत्रित होते हैं, जब स्थिति गंभीर होने लगती है तब ये आधुनिक चिकित्सा के उपचार का सहारा लेते हैं। इनका प्रयास हमेशा यथासंभव परंपरागत विधि से ही रोगों का उपचार करना होता है ।

निष्कर्ष

आज देश में अभी भी बड़ा तबका स्वास्थ्य समस्या एवं अन्य समस्याओं से जूझने को विवश है जिनमें ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्र एक ज्वलंत उदाहरण है। अज्ञानता, आवागमन की सुविधाओं का अभाव, चिकित्सा सुविधा की अनुपलब्धता के कारण शासन द्वारा स्वास्थ्य संकेतकों में निरंतर सुधार एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के बावजूद जनजातीय तथा ग्रामीण क्षेत्र में प्रगति बहुत ही धीमी है एवं चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के कारण जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ इस क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही है। ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा तंत्र में तत्काल सुधार करने की महती आवश्यकता है, क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय, गया, *''भारतीय जनजातीय संस्कृति''*, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली 2004।
2. प्रधान, अशोक, *''जनजातीय जनांकिकी''*, शताश्री प्रकाशन, रायपुर संस्करण।
3. श्रीवास्तव, ए.आर.एल., *''सामाजिक मानवशास्त्र : भारत का जनजातीय संदर्भ''*, 1989।

****